अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तेरापंथ दर्शन (वर्ष : 2021) दिनांक : 21.12.2021

समय सीमा : 3 घंटा तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

प्र. 1 किन्हीं अठारह प्रश्नों का उत्तर एक वाक्य में दीजिए– 18

आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली (किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर दें)–

(क) आचार्य भिक्षु ने साधु और श्रावक के बीच सीमा व स्वावलम्बन का बोध कब व किसे दिया?

(ख) तेरापंथ के संविधान का प्रथम सूत्र क्या है?

(ग) धृतिमान पुरूष किसे कहते हैं?

(घ) दुःख मुक्ति का एकमात्र साधन क्या है?

(ङ) आत्म-दमन का अर्थ क्या है?

(च) गुरु शिष्य में छुपी अर्हता को जगाने के लिए कौन से दो उपाय काम में लेते हैं?

(छ) भगवान महावीर के धर्मशासन में कितने साधु-साध्वियों थी? तथा उनके परिनिर्वाण के बाद शासन सूत्र को किसने संभाला?

(ज) व्यक्ति का दृष्टिकोण सम्यक कब बनता है?

(झ) मुनि वेणीराम जी ने आचार्य भिक्षु से निवेदन किया–मैं थली प्रदेश में जाऊं और चन्द्रभाण जी से चर्चा करूं। तब आचार्य भिक्षु ने क्या कहा?

(ञ) 'गणतत्तिविप्पमुक्को' से क्या अभिप्राय है?

(ट) आचार्य भिक्षु ने तेरह महीनों का प्रवास कहां व क्यों किया?

आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता (किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर दें)–

(ठ) आध्यात्मिक विकास की अनिवार्य शर्त क्या है?

(ड) सूत्रकृतांग सूत्र की निर्युक्ति में आचार्य भद्रवाहु ने लौकिक धर्म के कितने व कौन-कौन से भेद किए हैं?

(ढ) 'साधु को लब्धि नहीं फोड़नी चाहिए।' यह किस सूत्र में बताया गया है?

(ण) आचार्य भिक्षु के मन्तव्य में प्राण-रक्षा को परम विशुद्ध और आध्यात्मिक रखनेके लिए कौन सा विवेक अपेक्षित है?

(त) चरम मुक्ति के शुद्ध साध्य की प्राप्ति के साधन कौन-कौन से हैं?

(थ) दुनिया में बिना शारीरिक श्रम के भिक्षा मांगने का अधिकार केवल सच्चे सन्यासी को है? दान की यह परिभाषा किसने दी और उनका सच्चे सन्यासी से क्या अभिप्राय है?

(द) श्रमणों के स्तर को उन्नत करने के लिए आचार्य भिक्षु ने कौन-सी मर्यादा बनाई?

(ध) आगमानुसार कौन सा शरीर छहकाय जीवों का शस्त्र है?

(न) मार्क्स का वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त किस मत को मानता है?

(प) किन्हीं दो पाश्चात्य चिंतको के नाम लिखें जिन्होंने लौकिक और लोकोत्तर की भिन्नता को स्पष्टता से स्वीकार किया है।

आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली–23

प्र. 2 किसी एक प्रश्न का उत्तर 100 से 150 शब्दों में दीजिए– 6

(क) जैन आगमों में किन कारणों से संघमुक्त होकर साधना की आज्ञा दी गई है तथा इस साधना के लिए किन-किन अर्हताओं का अर्जन आवश्यक है? 'ठाणं' सूत्र के आधार से वर्णन करें।

(ख) 'आवश्यक है चारित्र मोह का क्षयोपशम' पर टिप्पणी लिखें।

प्र. 3 आग्रह के दुष्परिणामों को जनते हुए भी व्यक्ति आग्रही बन जाता है पर आचार्य भिक्षु जैसे गुरुओं का दिशादर्शन मिल जाए तो व्यक्ति टूटने से पहले ही समाधान पा लेता है। विभिन्न उद्धरणों से स्पष्ट करें। 15

अथवा

सिद्ध करें कि आचार्य भिक्षु को संघहित की दृष्टि से जो उचित लगा वही किया। नेतृत्व की इस कसौटी पर वे शत प्रतिशत खरे उतरे।

आचार्य भिक्षु के विचारों की प्रासंगिकता–21

प्र. 4 किसी एक प्रश्न का 100 से 150 शब्दों में उत्तर दीजिए– 6

(क) आचार्य भिक्षु ने संघ से पृथक होने वाले के लिए कुछ निर्देश दिए, उनका विवेचन करें।

(ख) 'समाज बनाम धर्म' का विवेचन करें।

प्र. 5 'किसी का मृत्यु से बच जाना, अन्य को बचाना या बचाए जाने पर खुशी मनाना–ये तीनों बातें मोक्ष धर्म से दूर हैं।' गांधीजी व आचार्य भिक्षु के विचारों द्वारा स्पष्ट करें। 15

अथवा

आचार्य भिक्षु, गांधी जी व पाश्चात्य चिंतकों ने धर्म के 'अनिवार्यता बनाम प्रासंगिकता' का जो विवेचन किया है उसे प्रस्तुत करें।

अनुकम्पा की चौपाई–30

प्र. 6 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए– 5

(क) साधु जीवों को उठाकर छाया में रखे तो कौन सा दोष लगता है और उसका परिणाम क्या होता है?

(ख) कडबे तुम्बे का आहार कर चींटियों की अनुकंपा किसने की?

(ग) भगवान ने दया का रहस्य किस सूत्र में प्रकट किया है?

(घ) कौन सी सात बातों की इच्छा करना नितान्त पाप है?

(ङ) भगवान को संगम देव ने कौन-कौन से कष्ट दिए?

(च) भगवान महावीर गोशालक को नहीं बचाते तो क्या होता?

(छ) जीव-दया के मौलिक दृष्टांत कौन-कौन से हैं?

प्र. 7 कर्मों के अनुसार जीव जन्मते हैं और मर जाते हैं। उनके असंयत जीवन के लिए साधु उपाय नहीं करते। ढाल चार के आधार पर स्पष्ट करें। 10

अथवा

'जीव जीते हैं वह दया नहीं है, मरते हैं वह हिंसा नहीं है। मारने वाले को हिंसा होती है जो नहीं मारता वह दयावान होता है।' विवेचन करें।

प्र. 8 किन्हीं दो प्रश्नों की सप्रसंग व्याख्या करें– 5

(क) जगत ने मरता देख नें जी, आडा न दीघा हाथ।
धर्म जांणे तो आगो न काढ़ता, अे तिरण तारण जगनाथ।।

(ख) काचा था ते चल गया, ते होय गया चकनाचूर।
के सेंठा रह्या चलीया नहीं, त्यांनें वीर बखांण्या शूर।।

(ग) दरबे भाव लाय लागी, तिण मांहे केयक बेरागी।
तिणरी अणुकंपा आवे, उपदेश देई समझावे।।

(घ) दुखिया-दोरा देख दलद्री, अणुकंपा उणरी किण आंणी।
आप हणें नहीं पाप सूं डरता, अणुकंपा आंण न मेले छाया।।

भिक्षु वाणी–10

प्र. 9 किन्हीं तीन विषयों पर पद्य लिखें– 10

(क) व्रत

(ख) विनीत-अविनीत

(ग) सत्पुरूष

(घ) धर्म

(ङ) उपदेष्टा।